शमशेर बहादुर सिंह

जीवन परिचय :– नयी कविता के समर्थकों में शमशेर बहादुर की एक विशेष छवि है। आपका जन्म 13 जनवरी 1911 को देहरादून में हुआ
था। आप की प्रारंभिक शिक्षा देहरादून में ही हुई। आप ने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आपको चित्रकला में विशेष रूचि थी। आपने सुमित्रानन्दन पंत के पत्र रूपाम में काम किया। 1977 में आपकों 'चुका भी हूँ नहीं मैं' काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको कबीर सम्मान के साथ–साथ अन्य अनेक पुरूस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1993 में दिल्ली में आपका देहांत हो गया।

उषा

पाठ का सार :– सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग जैसा है, थोड़ा उजाला होने पर शंख सा दिखाई देता है। आकाश ऐसे लग रहा है जैसे राख से लिपा चौका। थोड़ा सूर्य उदय होने पर ऐसे लग रहा है जैसे काली सिल पर किसी ने केसर मल दिया हो या उस पर लाल
खड़िया चाक मल दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसे लग रहा है मानो नीले जल में कोई गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा हो। सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है।

प्रात का नभ बहुत नीला शंख जैसा
मोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।
और
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है ।

व्याख्या :– सुबह का आकाश बहुत नीले शंख जैसा लग रहा है। सुबह के आकाश में नमी है। आकाश ऐसे लग रहा है जैसे राख से लिपा चौका हो जो अभी गीला है। थोड़ा सूर्योदय होने पर आकाश ऐसे लग रहा है जैसे काली सिल पर किसी ने लाल केसर मल दिया है या फिर ऐसे लग रहा है जैसे किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो। कुछ और सूर्योदय होने पर नीले आकाश में सूर्य ऐसे लग रहा है जैसे नदी में कोई गोरे रंग का व्यक्ति नहा रहा हो उसकी गोरी देह झिलमिला रही हो।
धीरे–धीरे उषा का जादू टूट जाता है और पूर्ण सूर्योदय हो जाता है तथा सारे दृश्य लुप्त हो जाते हैं।

भाषा सौन्दर्य :–

1. सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य बिम्ब
4. सूर्य को गोरे रंग का व्यक्ति कहा है इस लिए मानवीकरण अलंकार
5. चित्रात्मक शैली
6. नीला शंख जैसा–उपमा अलंकार
7. राख से लिया चौका, काली सिल, स्लेट पर लाल खडिया चाक, गौर झिलमिल देह–उत्प्रेक्षा अलंकार

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. मोर का नभ किसके समान नीला है ?
उत्तर :– शंख के समान

प्रश्न 2 कवि ने नभ को राख से लीपा चौका क्यों कहा है ?
उत्तर :– आकाश में रात की कालिमा खत्म हो रही है। हल्का सफेद प्रकाश फैल रहा है तथा आकाश में सुबह की नमी है। ऐसे लग रहा है सुबह का आकाश राख से लीपा चौका है, जो अभी गीला है।

प्रश्न 3. उषा का जादू टूटने से क्या तात्पर्य है ?
उत्तर :– उषा का जादू टूटने पर पूर्ण सूर्योदय हो जाता है तथा उषा कालीन दृश्य खत्म हो जाते हैं।

प्रश्न 4. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है ?
उत्तर :– कवि ने सुबह के आकाश को राख से लिपा चौका कहा है, उसे काली सिल कहा है, जिस पर केसर मला हो या फिर स्लेट है, जिस पर लाल खड़िया चाक मला गया है। यह शब्द चित्र गाँव की सुबह का गतिशील दृश्य लग रहा है। जैसे घर की गृहणी सुबह उठते ही चौका लीपती है, इस के बाद सिल पर मसाले पीसती है और भोजन बनाती है तथा बच्चा भोजन कर अपनी स्लेट ले कर स्कूल जाता है। इसलिए कह सकते हैं कि वास्तव में कविता गाँव का गतिशील शब्द चित्र है।

प्रश्न 5. भोर का नभ
राख से लीपा चौका
(अभी गीला पड़ा है) –क्या तात्पर्य है ?
उत्तर :– नयी कविता में नये–नये प्रयोग किये जाते हैं। इस कविता में कोष्ठक का प्रयोग अतिरिक्त सूचना देने के लिए किया है। आकाश में भोर का प्रकाश फैल रहा है। आकाश में रात्री की नमी भी है। इसे व्यक्त करने के लिए कहा है– भोर का नभ राख से लीपा चौका है, जो अभी गीला पड़ा है।

* * * * *